

जीवन एक यात्रा है, जो बाहरी तथा अंतर्जगत में अलग अलग तरह से गतिशील होती है। इस यात्रा के हम सभी सहयात्री हैं, जो अपने प्रेम, शांति तथा इसके विपरीत ईर्ष्या और नफरत से प्रभावित होकर यात्रा करते हैं। जो उपरोक्त दो बातों से प्रभावित होते हैं, वे थोड़ा तो चलते हैं ठीक, लेकिन जिनकी यात्रा ईर्ष्या और नफरत से भरी है, वे यात्री सदा दुःखी रहते हैं।

दुनिया में भी कहा जाता है कि जो आसक्ति से बंधा हुआ इंसान है, वो कहीं भी निस्पक्ष

निर्णय लेने में असमर्थ है। जहां भी प्रेम बहुत ज़्यादा है या फिर नफरत बहुत ज़्यादा है, दोनों स्थानों पर व्यक्ति मात ख ा त ा है। और ऐसे में बाह्य

जगत में तो हम चल भी पाते हैं, लेकिन अंतर्जगत में हमें यात्रा कष्टकारी लगती है। हमें उन्नति फील नहीं होती, उसमें ठहराव नज़र आता है। और ठहराव ऐसा है कि आज तक भी हम अपने नज़रिये को न बदल पाने के कारण इस यात्रा में आगे ही नहीं बढ़ पा रहे हैं। आसक्ति की डोर हमें चारों तरफ से ऐसा बांधती है कि हम हिल नहीं सकते। अध्यात्म में शायद ये बात समझ में आ जाये, लेकिन दुनिया में तो कहा जाता है कि जो व्यक्ति कहीं पर मृत्यु को प्राप्त होता है, तो जिस घर में या जिस परिवार में रहता है, उसमें जो संस्कार वो लेकर जाता है, उस संस्कार के कारण फिर से वो उसी परिवार के आस पास उन्हीं आसक्तियों के कारण दोबारा पैदा हो जाता है। आज हम कोई भी कर्म करते हैं, चाहे अच्छा करें, या बुरा,

हर कर्म राग और द्वेष के आधार से ही होता है। अगर राग के आधार से है, तो भी आप उसके परिणाम से खुश होंगे, लेकिन

उठकर कर्म करना सीखना पड़ेगा। हम सभी जीवन

जीवन के तमस को खत्म करें



- ब्र. कु. अनुज, दिल्ली

थोड़ी देर बाद दुःखी हो जायेंगे, क्योंकि आपको वैसा ही परिणाम हमेशा चाहिए। अगर द्वेष से किया तो आप उस परिणाम से कभी खुश नहीं होंगे। तो आप सोचिए कि आपका अंतर्जगत कितना परेशान रहता है। वो सबकुछ कर रहा है दुनिया में दिखावे के लिए, लेकिन रात को उसे नींद ही नहीं आती, क्योंकि या तो वो कर्म राग से किया या द्वेष से किया। इसलिए मेडिटेशन में ये बात हमेशा सिखायी जाती है कि ध्यान लगाना ज़्यादा ज़रूरी नहीं है, बल्कि जहाँ ध्यान आपका लगा हुआ है, उसको हटाना अधिक ज़रूरी है। ऐसा नहीं है कि जहाँ आपकी आसक्ति है, उसके लिए आप पुण्य का कार्य करेंगे, वहाँ भी नैतिकता को ताक पर रखकर, अपने विवेक को मारकर गलत कर ही देते हैं, और जहाँ द्वेष है, वहाँ तो गलत ही हो रहा है। विवेक सम्मत कर्म के लिए हमें राग और द्वेष से ऊपर

को यदि किसी शर्त के बिना जीना शुरू करें, जिसमें परिणाम कुछ भी हो, लेकिन कर्म हम सिर्फ इसलिए करें, क्योंकि हम उस कर्म को प्यार करते हैं। तो कर्म का प्रभाव राग द्वेष से ऊपर उठकर आपको मिलेगा, इसको कहते हैं न्यूट्रल होगा और आप खुशी खुशी जीवन व्यतीत करेंगे। हम आपको बतायें कि हमारा ज्ञान योग इसी बात पर केन्द्रित है कि हम कोई भी कर्म आसक्ति से ना करें, नहीं तो थकावट होगी। इस थकावट से निकलने का सिर्फ एक माध्यम है, वो है समझ कि मैं कर्म इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मैं कर्म को प्यार करता हूँ, इसीलिए आप ये नहीं कहो कि मैं ड्यूटी कर रहा हूँ। नहीं तो हमेशा कर्म से दुःखी रहेंगे। तो जीवन के तमस को खत्म करने के लिए विवेक सम्मत कर्म करो।

पांच रास्तों से अशांति का प्रवेश होता है

चिकित्सा निदान तब ही कर सकती है जब रोग ठीक से पकड़ में आ जाए। अंदाज़मर इलाज बेवक्त मुसीबत या मौत को निमंत्रण देने जैसा है। इसलिए समझदार डॉक्टर पहले रोग और उसके कारण को पकड़ता है, फिर निदान के लिए इलाज शुरू करता है। हमारे जीवन में एक बीमारी होती है अशांति रहना। जिन्हें शांति की तलाश हो वे सबसे पहले अशांति को समझें। ऋषि मुनियों ने कहा है कि अशांति



को जानना ही शांति का प्राप्त होना है। बहुत गहरी बात बड़ी सरलता से कही गई है। कम से कम अपनी अशांति और उसके कारण को तो जान जाइए। पांच रास्तों से इंसान के जीवन में अशांति का प्रवेश होता है - असंतोष, अपूर्ण इच्छा, अधिक चाहत, आवेश और अहंकार। संतोष तो आजकल किसी को रह ही नहीं गया। जिसे देखो वह कहीं न कहीं असंतुष्ट नज़र आता है। इसके बाद एक होती है अपूर्ण इच्छा। मिल गया, भोग लिया, फिर भी अपूर्णता...। उसके बाद अधिक चाहत..। और मिल जाए..। और मिल जाए..। इससे भी अधिक अशांति आती है। अरे, कहीं तो संतुष्ट होकर रुकना पड़ेगा, लेकिन चाहत के मामले में कोई रुकना ही नहीं चाहता। जब ये तीनों बातें ठीक से नहीं होती हैं तब आता है आवेश, और यदि इन सबसे पार पड़ जाए तो अहंकार प्रवेश कर जाता है। कई बार तो देखते हैं कि भले लोग भी अहंकार के शिकार होकर अशांति हो जाते हैं। तो इन पांच रास्तों से अशांति आने को तैयार है। सावधान हो जाएं और इन पर नियंत्रण पा लें तो शायद अशांति आप तक आने से पहले अपना रास्ता मोड़ लेगी।

उपलब्ध पुस्तकें जो आपके जीवन को बदल दें



जबलपुर-सिविल लाईन। मातेश्वरी जी के स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में पार्षद कमलेश अग्रवाल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र. कु. मधु।



ये समय है परमात्म प्यार और मदद के अनुभव का

प्रश्न : लाइफ में कुछ प्रॉब्लम आने पर पति ही मदद करते हैं बाबा नहीं, ऐसा आपको अनुभव होता है?

उत्तर : ये आपका भ्रम है बहन। निराकार बाबा अपने बच्चों की मदद किसी साकारी द्वारा ही तो करवायेंगे ना। जबकि आपने खुद बताया कि पति आपसे नाराज़ रहते हैं, फिर भी मदद करते रहते हैं तो ये बाबा की मदद ही है, जो नाराज़ आत्मा भी मदद करने को बन्धायमान रहती है।

प्रश्न : कुछ परिस्थिति में बाबा की मदद का अनुभव नहीं होता? **उत्तर :** बाबा को हम बच्चों के रहे हुए कार्मिक अकाउंट भी तो पूरे करवाने हैं ना। क्या बाप चाहेगा कि हम बच्चों को धर्मराज की कड़ी सजा खानी पड़े? इसलिए हर बार कोई चाहे कि बाबा की प्रत्यक्ष मदद का अनुभव हो तो शायद ये सही नहीं है। और परिस्थिति में ही तो हमारी स्व स्थिति का संज्ञान हमें होता है कि हमारी ज्ञान युक्त, योगयुक्त, धारणायुक्त अवस्था कहाँ तक परिपक्व हुई है, कहाँ तक हम बच्चे बाप और ड्रामा में निश्चयबुद्धि बने हैं।

ड्रामा कल्याणकारी है। हर अकल्याणकारी सीन के पीछे भविष्य का बेहद का कल्याण छिपा हुआ है। इसलिए कभी किसी परिस्थिति में बाबा की प्रत्यक्ष मदद का अनुभव ना हो रहा हो, तो उस परिस्थिति को अपनी स्व स्थिति से पार करें। 3 साल के बच्चे चलने लायक हो जाते हैं इसलिए बाबा भी बीच बीच में हमारी अंगुली छोड़कर हमें चलना और दौड़ना सिखा रहे हैं। इसलिए कभी भी दिलशिकस्त हो बाप और ड्रामा पर अनिश्चय ना करें। बाप कल्याणकारी है तो संगमयुग भी कल्याणकारी है।

प्रश्न : प्यूरिटी में इतनी ताकत है तो ब्राह्मण जीवन में इतनी प्रॉब्लम क्यों?

उत्तर : प्यूरिटी में बहुत ताकत है। भक्तिमार्ग में भी दैहिक प्यूरिटी सम्पन्न साधु सन्यासियों के आगे प्रधानमंत्री तक भी नतमस्तक होते हैं। फिर हमारी प्यूरिटी तो स्वयं पवित्रता के सागर परमपिता परमात्मा के डायरेक्शन अनुसार है। इसलिए इसमें अथाह बल तो भरा हुआ ही है। पर क्या आपने सचमुच में प्यूरिटी की ताकत अपने में भरी हुई है? कहीं आपने स्वार्थ की पूति के लिए तो पवित्रता धारण नहीं की है? क्योंकि अगर पवित्रता धारण किया है तो स्वप्न में भी बाप या ड्रामा पर अनिश्चय हो नहीं सकता। किसी भी प्रकार

का अनिश्चय होना इम्प्यूरिटी ही है।

प्रश्न : क्या बाबा एक आत्मा को कनिंस नहीं कर पा रहे हैं?

उत्तर : बाबा कल्प पहले वाली देवताई कुल की आत्माओं को पुनः देवता बनाने के लिए आये हैं। यदि आपके युगल देवताई कुल के होंगे तो उनको ये ज्ञान अवश्य अपनी तरफ आकर्षित करेगा, पर ज्ञान की तरफ आकर्षण उनका तब और भी जल्दी होगा, जब वो आपके पूर्व आचरण में अत्यंत पॉज़िटिव बदलाव देखेंगे। अगर उनको बदलाव नहीं दिखेगा तो संभवतः उनका इस ज्ञान मार्ग की तरफ आकर्षण ना हो या बहुत बाद में हो।

प्रश्न : जो प्यूरिटी की धारणा नहीं कर रहे, वे आराम से सेंटर आ और जा रहे हैं और जो धारणा कर रहे हैं उन पर ही इतनी आपदाएं क्यों?

उत्तर : बाबा के दो प्रकार के बच्चे हैं - सगे और लगे। जो धारणाओं में ना चलने के बाद भी आ-जा रहे हैं, मान-सम्मान पा रहे हैं, ऐसी आत्मायें बाद में प्रजा में भी नीचे का पद पायेंगी। इसलिए ऐसी आत्माओं को देखकर इन पर रहम आना चाहिए ना कि ईर्ष्या।

हम माया के 63 जन्मों के आसामी हैं। क्या माया इतनी जल्दी हम पर अपना अधिकार छोड़ देगी? नहीं ना। इसलिए माया धारणावान हर ब्राह्मणों के सम्मुख अनेकों परिस्थिति लाकर उन्हें ज्ञान मार्ग से डिगाने का प्रयत्न करती है। और आत्मायें माया के इस रूप को भली भांति जानकर शिव बाबा से और भी कम्बाइन्ड होती जाती हैं, जिससे अंत में माया हारकर उन बच्चों के आगे समर्पण कर देती है।

इसलिए बहन, आपदाओं से ना घबराएं। पर इन आपदाओं के पहाड़ के आगे जो सुखमय दुनिया का राज्य भाग्य मिलना है, उसको स्मृति में रख और स्वयं को महावीर समझ, इन आपदाओं रूपी पहाड़ को छलांग लगाकर पार कर लें।

ध्यान दें :- हम प्यूरिटी आदि धारणाएं, जो मरजीवा ब्राह्मण जीवन के लिए अपरिहार्य है, करते हैं तो ऐसा कदापि ना समझें कि हम बाबा पर कोई एहसान कर रहे हैं। बल्कि ये कहना सत्य होगा कि बाबा ने हमें अपना बनाकर हम पर बहुत एहसान किया है। इसलिए सामने आने वाली परिस्थितियों को अपनी स्व-स्थिति में स्थित रह कर पार करें। बाबा और ड्रामा पर दोषारोपण करने से कुछ नहीं होगा। स्वयं को महारथी समझें क्योंकि बाबा ने बताया हुआ है कि महारथी से ही माया रुस्तम से रुस्तम होकर सामना करेगी। और बाबा ने ये भी बताया हुआ है कि परिस्थिति आती ही है। हमें अनुभवीमूर्त बनाने। अगर परिस्थिति नहीं आयेगी तो हमें अपनी वर्तमान अवस्था का भान नहीं होगा और जिससे फिर उस अनुसार पुरुषार्थ ना कर पाने के कारण अंत समय हम माया से हार खा लेंगे।

Contact e-mail
bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ़ माइंड चैनल'

24x7 Ad-Free Value Based Channel

Peace of Mind CHANNEL

TATA SKY 1065

airtel digital TV 678

VIDEOCON d2h 497

dishtv 1087

+91 8104 777 111 | info@pmtv.in | www.pmtv.in